Maratha Empire

1. शिवाजी महाराज का परिचय
2. शिवाजी के प्रमुख विजय अभियान
3. शिवाजी का प्रशासन
4. शिवाजी का मूल्यांकन
5. शिवाजी के उत्तराधिकारी
6. प्रमुख पेशवा
7. आंग्ल मराठा संघर्ष
8. मराठा असफलता के कारण

मलिक अंबर

- **अहमदनगर** सल्तनत का एक **प्रभावशाली प्रधानमंत्री**
- मूल रूप से **इथियोपिया (हब्शा)** का निवासी
- बचपन में दास के रूप में बेच दिया गया।
- अहमदनगर : मुरताज़ा निज़ाम शाह द्वितीय के शासन में
- उसने महाराष्ट्र में गुरिल्ला युद्ध (शिवाजी से पहले का गनिमी कावा) को संगठित रूप दिया।
- दक्षिण भारत में मुगलों की बढ़त को 20+ वर्ष रोका।
- खड़की (वर्तमान औरंगाबाद) : नेहर-ए-अंबर जैसी प्रसिद्ध नहर प्रणाली का निर्माण कराया

मराठा शक्ति

परिचय (1627-80)

1. **जन्म :-** 19 फरवरी 1627 (शिवनेर, जुन्नार, महाराष्ट्र)
2. **माता:-** जीजाबाई
3. **पिता:- शाहजी भोंसले** (बीजापुर शासक के कर्मचारी+शिवाजी को पुणे जागीर दी +सिसोदिया वंश से संबंधित)
4. **गुरु:-** समर्थ गुरु रामदास
5. **संरक्षक:-** दादा जी कोंडदेव
6. **राज्याभिषेक:-**
   - प्रथम – **6 जून 1674** (काशी पंडित विश्वेश्वर भट्ट गागा भट्ट, रायगढ़
   - ब्रिटिश अधिकारी : हेनरी ऑक्सेंडेन (बॉम्बे)
   - उपाधियाँ : छत्रपति, हिनदव धर्मोद्धारक,, गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक, क्षत्रिय कुलवंतमसा, यवन प्रतिपीड़क
   - संवत् चलाया
   - हूण (स्वर्ण) तथा शेवराय (ताम्र) मुद्रा चलाई
   - रायगढ़ को राजधानी घोषित
   - सोयराबाई को राजमहिषी घोषित किया
7. द्वितीय - 24 सितंबर 1674 (तांत्रिक निश्चल पुरी)
8. द्वितीय - 24 सितंबर 1674 (तांत्रिक निश्चल पुरी)
   - **सईबाई निंबालकर:** 1640, लाल महल (पुणे : पुत्र: संभाजी)
   - **सोयराबाई (पुत्र: राजाराम)**
   - **पुतळाबाई:** 1674 (राज्याभिषेक के बाद + सती हो गईं)
9. **मृत्यु:** 3 अप्रैल 1680 (रायगढ़ किला, महाराष्ट्र), ज्वर

- मराठा साम्राज्य के महान शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की आठ पत्नियां थीं।
- 1640 में उनकी पहली शादी सईबाई निंबालकर से हुई थी। इनकी ही संतान संभाजी महाराज थे।
- उनकी दूसरी पत्नी का नाम सोयराबाई मोहिते था, तीसरी पत्नी का नाम राणीसाहेब पुतला बाई भोसले, चौथी पत्नी सकवरबाई, पांचवीं पत्नी राजकुंवर बाई, छठवीं पत्नी काशीबाई, सातवीं पत्नी लक्ष्मीबाई और आठवीं पत्नी गुंवांताबाई थीं।
- शिवाजी महाराज की चार संताने थीं और सबसे बड़े बेटे संभाजी महाराज उनके उत्तराधिकारी बने थे।

शिवाजी महाराज का शासनकाल

1. **बीजापुर से संघर्ष (1646-60)**
   - तोरण
   - कोण्डना दुर्ग
   - जावली क्षेत्र
   - अफजल खां का वध
   - पन्हाला अभियान
2. **मुगलो से संघर्ष (1657-74)**
   - शाइस्ता खाँ
   - सूरत की प्रथम लूट
   - पुरन्दर संधि
   - आगरा
   - मुगलो से पुनः संघर्ष
3. **स्वतंत्र शासन (1674-80)**
   - 1674 : दो बार राज्याभिषेक
   - कर्नाटक विजय

शिवाजी महाराज के प्रमुख विजय अभियान

1. प्रारंभिक विजय (1643-1656)
2. कोंकण विजय (1657)
3. अफजल खा की हत्या (1659)
4. शाइस्ता खां से संघर्ष (1663)
5. सूरत की प्रथम लूट (1664)
6. जयसिंह और पुरंदर संधि (11th June 1665)
7. सूरत की द्वितीय लूट (1670)
8. राज्याभिषेक (6th June 1674)
9. राज्याभिषेक के उपरांत (1678)

1646	तोरण का किला (प्रचंडगढ़)	➤ बीजापुर के आदिलशाही राज्य के विरुद्ध ➤ पहला किला : शिवाजी महाराज ने 16 वर्ष की अल्पायु में विजय प्राप्त
1647	कोंडाणा (सिंहगढ़)	➤ आदिलशाही वंश के अधिकारी सिद्दी अंबर
1648	पुरंदर	
1656	जावली (सतारा)	➤ जावली अभियान : प्रतापगढ़ के किले का निर्माण : कोयना और नीरा नदियों ➤ प्रधानमंत्री मोरोपंत पिंगले और वास्तुकार हिरोजी इंदुलकर ने करवाया

1656	रायगढ़ (राजधानी)	➤ चंद्रराव मोरे से रायरी के किले पर कब्ज़ा कर लिया।
1659	अफजल खां की हत्या (प्रतापगढ़)	➤ अफजल खां : बीजापुर सुल्तान (अली आदिल शाह II) का सेनापति ➤ 1654 में शिवाजी के बड़े भाई संभाजी की हत्या में भी अफ़ज़ल ख़ाँ का हाथ था ➤ अफजल खान के दूत कृष्णाजी भास्कर तथा शिवाजी के दूत पंतोजी गोपीनाथ ➤ शिवाजी ने वाघनख के वार से अफजल खाँ को मार डाला
1663	शाइस्ता ख़ाँ (पुणे का लाल महल)	➤ शाइस्ता ख़ाँ : औरंगज़ेब के मामा और दक्कन का सूबेदार ➤ शाहजहां (दक्कन का सूबेदार औरंगजेब,1657) : शिवाजी का अहमदनगर और जुन्नेर पर आक्रमण
1664	सूरत की प्रथम लूट	➤ 6–10 जनवरी 1664 : मुगल (इनायत खाँ) व पुर्तगालियों को लूट ➤ अंग्रेज अधिकारी जॉर्ज ऑक्सेंडेन और लैस्कलेट द्वारा वर्णन ➤ 1670 : द्वितीय लूट
1665	पुरंदर की संधि	➤ 11 जून 1665 : राजा जयसिंह कछवाहा + शिवाजी महाराज ➤ इतालवी लेखक और तोपची: निकोलाओ मानुची
1666	जयपुर भवन	➤ मई 1666 : शिवाजी अपने पुत्र संभाजी के साथ आगरा गए तथा औरंगजेब के दरबार में पहुंचे ➤ औरंगजेब ने आगरा के जयपुर भवन में राम सिंह के संरक्षण में कैद किया ➤ अगस्त 1666 : शिवाजी कैद से भाग गए ➤ औरंगजेब ने 1666 में शिवाजी को राजा की उपाधि की पेशकश की
1670	कोंडाणा (सिंहगढ़)	➤ शिवाजी के श्रेष्ठ सेनापति : तानाजी मालुसरे - युद्ध के दौरान वे शहीद ➤ शिवाजी—"गढ़ आला पण सिंह गेला"(किला तो आ गया, लेकिन मेरा सिंह चला गया) ➤ शिवाजी ने कोंडाणा का नाम बदलकर "सिंहगढ़" रखा –तानाजी के सम्मान में।
1673	पन्हाला दुर्ग	➤ बीजापुर के आदिलशाही वंश से
1678	जिंजी	➤ शिवाजी का कर्नाटक प्रवेश (1676-1678) ➤ "दक्षिण का जिब्राल्टर" ➤ छत्रपति शिवाजी महाराज का अंतिम अभियान

फरवरी 1672 : साल्हेर का युद्ध

मुगल सेना पर मराठों की विजय

- 11 जून 1665 ई को पुरन्दर की संधि हो गयी -
  - शिवाजी ने अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को दे दिए
  - पुत्र शम्भाजी को 5000 का मनसब
  - शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुगल सम्राट को सहायता देने का वचन दिया
  - शिवाजी ने मुगल सम्राट को 13 किस्तों में कुल 40 लाख हूण देने पर सहमति व्यक्त की।
  - मुगलों ने शिवाजी के बीजापुर-नियंत्रित कोंकण और बालाघाट प्रांतों पर शासन को स्वीकार कर लिया। इन क्षेत्रों से क्रमशः 4 लाख हूण और 5 लाख हूण का वार्षिक राजस्व ।
- शिवाजी अपने पुत्र शंभाजी के साथ मुगल दरबार में उपस्थित + पंचहजारी मनसब की श्रेणी में खड़ा किया गया
- शिवाजी ने कूटनीति का सहारा लिया तथा फल की टोकरी में बैठकर भाग निकले
  - औरंगजेब : जय सिंह और दिलेर खान
  - शिवाजी + मुरारबाजी देशपाण्डे

शिवाजी का प्रशासन

1. परिचय
2. अष्टप्रधान
3. प्रांतीय
4. राजस्व
5. सैन्य
6. न्याय

सामान्य प्रशासन

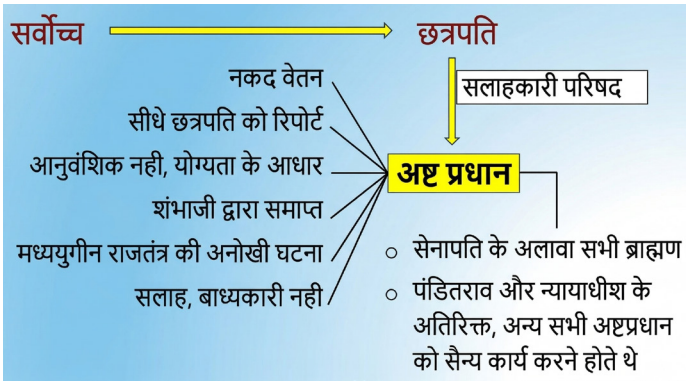

1. **पेशवा (प्रधानमंत्री):- मोरोपंत पिंगले:-**
   - राज्य का प्रशासन
   - राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यों
   - प्रथम - मोरोपंत पिंगले
2. **अमात्य (पन्त व मजुमदार) :- रामचंद्रपंत नीलकंठ:-**
   - यह वित्त एवं राजस्व मंत्री होता था।
   - आय-व्यय के सभी लेखों की जाँच करना
3. **वाकियानवीस (मंत्री) :- दत्ताजी पंत:-**
   - सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह
   - गृहमंत्री की भाँति होता था।
4. **सुमंत (दबीर) :- रामचंद्र त्र्यंबक:-**
   - यह राज्य का विदेश मंत्री होता था।
5. **सचिव/चिटनिस/शुरूनवीस :- अन्नाजी दत्तो:-**
   - राजकीय पत्राचार
   - मुख्य कार्य - राजकीय पत्रों की भाषा, शैली की जाँच करना
6. **सेनापति (सर-ए-नौबत) :- हब्बीर राव मोहिते:-**
   - सैन्य प्रधान सेना की भरती, संगठन, अनुशासनं
   - प्रथम - हब्बीर राव मोहिते
7. **पण्डितराव (सद्र) :- रघुनाथ राव पंडित-**
   - धार्मिक कार्यों की देखरेख
   - धार्मिक कार्यों के लिए दिये जाने वाले अनुदानों का दायित्व
8. **न्यायाधीश :- निराजी पंत:-**
   - न्याय विभाग का प्रधान।
   - मुख्य कार्य - फौजदारी और दीवानी मुकदमों की सुनवाई तथा राज्य में न्याय और कानून की व्यवस्था का रखरखाव

क्र	नाम	कार्य
1	पेशवा	प्रधान मंत्री
2	सर-ए- नोब	सेनापति
3	अमात्य	वित्त एवं राजस्व मंत्री
4	वाक्यन्वीस (मंत्री)	सूचना मंत्री, गुप्तचर विभाग
5	चिटनीस	चिट्ठी/डाक विभाग का कार्यालय
6	सुमंत	विदेश मंत्री
7	पंडित राव	धार्मिक मंत्री
8	न्यायाधीश	न्यायालय से संबंधित

प्रमुख अधिकारी एवं प्रशासनिक इकाइयां

यह आठों अधिकारी, प्रत्येक प्रान्त में सर-सूबेदार के अधीन

- **दीवान** - सचिव
- **मजूमदार** - लेखाकार
- **फड़निस** - उप लेखा परिक्षक
- **दफ्तरदार** - कार्यालय प्रभारी
- **कारखानिस** - रसद अधिकारी
- **चिटनिस** - पत्राचार
- **जमादार** - खजांची
- **पोटनिस** - रोकड़िया
  - मराठा साम्राज्य (छत्रपति)
  - 04 प्रान्त (सर ए सूबेदार)
  - परगना - मामलातदार
  - महाल (सरहवलदार)
  - तर्फ (हवलदार)
  - मौज (कारकुन)
  - ग्राम (पाटिल)

जमींदार वर्ग : देशपाण्डे +देशप्रमुख

राजस्व प्रशासन

1. स्वराज

- मराठा प्रांत (पूर्ण अधिकार)
- भूराजस्व (व्यवस्था)
  - मलिक अंबर + अन्नाजी दत्ते
  - तकावी ऋण + ठेके पर देने की प्रथा समाप्त
  - रैयतवाड़ी : किसानों (रैयत) को मालिकाना हक - 33% से 40 % (नकद व अनाज)
  - कटही (काठी) का प्रयोग करके भूमि मापन

2. मुल्क – ए - क़दीम

- अन्य शासको (मुगलों+आदिलशाही) के भाग
- चौथ व सरदेशमुखी

चौथ व सरदेशमुखी

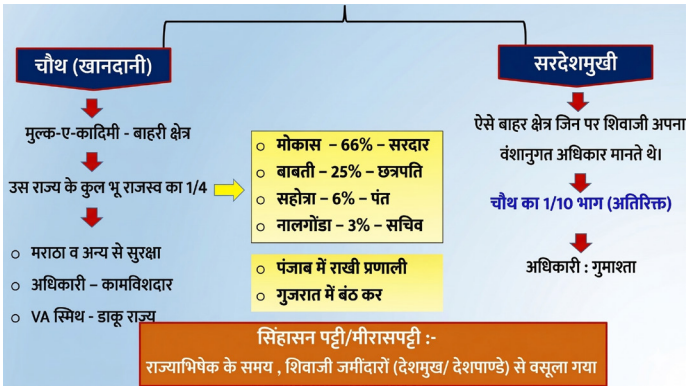

न्याय प्रशासन

1. राजभाषा → मराठा

- मराठी शब्दकोष : राज व्यवहार (रघुनाब हनुमन्ते)
- कायस्थ धर्म प्रतिपालक न्याय + मनुस्मृति

2. संरचना

- छात्रपति
- हुजूर-हाजिर - मजलिस (न्यायधीश)
- पटेल (ग्रामीण)

3. धार्मिक नीति

- मस्जिदों में रोशनी जलाने के व्ययन हेतु जमीन अनुदान दिया जाता था ।
- युद्ध अभियान के दौरान मस्जिदों को नुकसान नहीं पहुँचाने का आदेश
- किसी को भी मजबूरन दास न बनाया जाए
- तुलजा भवानी आराध्य देवी थी।
- शिवाजी का नाम, शिवनेरी माता के आधार पर

सैन्य प्रशासन

1. अत्यंत कठोर अनुशासन + नकद वेतन
2. सेना के भाग:-
   - दुर्ग व गुरिल्ला प्रणाली → मलिक अम्बर से प्रेरित
     - अधिकारी → सिबनिस, हवालदार, सर-ए-नौबत
   - पाइक (पैदल सेना) → सर-ए-नौबत (सभी धर्म)
   - पागा (घुड़सवार सेना) → सिलेदार (स्वयं के घोडे) व बरगीर
   - नौ सेना
     - कोलाबा (मुख्य) + कल्याण + भिवण्डी
     - अधिकारी : कान्होजी आंग्रे, मायनाक भंडारी, दार्या सारंग वेंतजी और दौलत ख़ाँ
     - युद्ध पोत → गुराब, गालबात, शिराब व मंचुआ

सरंजामी प्रथा : सैनिक सेवाओं के बदले भूमि-अनुदान

- ***शिवाजी के सैनिक : मावली***
- ***शिवाजी महाराज की तीन प्रसिद्ध तलवारें : भवानी, जगदम्बा और तुलजा***

गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में महारत

सिद्दी इब्राहिम खान : राजा जीजीभाई भोसले द्वारा दिया गया तोपखाने का प्रमुख

किला प्रशासन

किल्लेदार	किले का मुख्य प्रभारी
शिबंदी नायक / हवालदार	आंतरिक सुरक्षा
सबनीस	आर्थिक प्रशासन
कारखानीस	शस्त्रागार, गोला-बारूद, रसद-सामग्री व भंडारगृह का प्रबंधन।
सरनौबत	किले या क्षेत्र की संपूर्ण सैन्य कमान; युद्धनीति और सैनिक कार्रवाई

ग्रामीण प्रशासन

पटेल	मुख्य प्रभारी
कुलकर्णी	गाँव का मुख्य लेखाकार
चौगुले	पटेल की सहायता करता
पोतदार	सिक्कों के निर्धारित भार
।2 बलूटे (शिल्पी) तथा ।2 अलूटे (सेवक)	
चौकीदार (लाग्ला) : अपराधियों के पता लगाने का काम	

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शिवाजी (1674-80)
- शम्भाजी (1680-89)
- राजाराम (1689-1700)
- ताराबाई / शिवाजी II (1700-07)
- शाहू (1708-49)
- राजाराम द्वितीय (1749-50)
- अंतिम छत्रपति : शाहजी अप्पासहेब

1. पूना में स्थित पेशवा का सचिवालय (हजूर दफ्तर) मराठा प्रशासन का केन्द्र
2. कोतवाल : नगर का मुख्य प्रशासक
3. मिरासदार भोंसले : स्थायी भूस्वामित्व
4. उपरिस : बटाईदार भूस्वामी
5. सरंजामी प्रथा : सैनिक सेवाओं के बदले सैन्य सरदारों व अधिकारियों को जो भूमि-अनुदान
6. पिंडारी, पाल पट्टी नामक कर वसूल करने के बदले में मराठा सेना के प्रत्येक अभियान में उनके साथ जाते थे।
   - सरकार को 25% हिस्सा

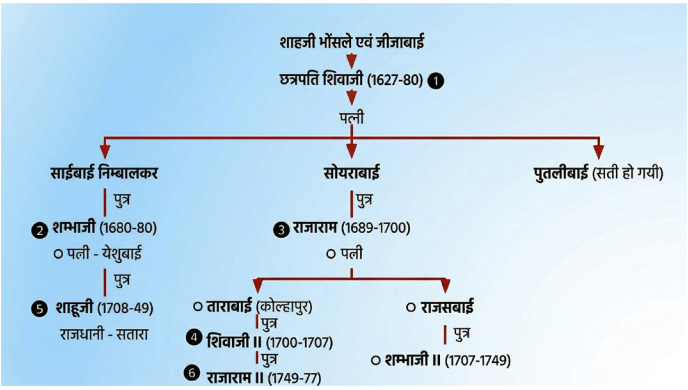

नाम	महत्वपूर्ण तथ्य
संभाजी महाराज 1680–1689	➤ संगमेश्वर का युद्ध 1689 = हम्बीराव मोहिते शहीद + मुकर्रब खाँ ने गिरफ्तार कर लिया। ➤ तुलापुर में 11 मार्च, 1689 को शंभाजी की मृत्यु हो गयी। ➤ कवि कलश (कन्नौज का ब्राह्मण) = शम्भाजी का प्रधान सलाहकार
राजाराम महाराज 1689–1700	➤ कभी भी राजसिंहासन पर नहीं बैठे, क्योंकि इसका मानना था कि इस गद्दी पर शाहू-I का हक है। ➤ प्रशासन में एक नवीन पद 'प्रतिनिधि' (पेशवा से ऊपर) पद का सर्जन किया।
शिवाजी II (ताराबाई राजाराम की पत्नी; संरक्षिका)	➤ वाराना की संधि (1731) : सतारा (शाहू) और कोल्हापुर (शिवाजी द्वितीय) ➤ 1707: बहादुरशाह ने शाहू (शंभाजी का पुत्र) को मुक्त कर दिया। ➤ 12 अक्टूबर 1707: खेड़ा के युद्ध में ताराबाई और शाहू और बालाजी विश्वनाथ की सहायता से शाहू विजयी
छत्रपति शाहू महाराज I (सतारा): 1707–1749	➤ शाहू ने सेनाकर्ते नामक नवीन पद का सर्जन किया, जिस पर पहली नियुक्ति बालाजी विश्वनाथ की। ➤ 1713 में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा बनाया (6th पेशवा) + दिल्ली पर मराठा दबदबे (1719)
राजाराम II / रामराजा (छत्रपति, सतारा): 1749–1777	➤ 1750 में पेशवा बालाजी बाजीराव से राजाराम द्वितीय ने संगोला की संधि कर ली ➤ छत्रपति नाम मात्र का प्रधान रह गया तथा सतारा के किले में बंदी की तरह जीवन व्यतीत करने लगा